2 सितम्बर 2012, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

अनुकूल संयोगों में प्रसन्न और प्रतिकूल संयोगों में अप्रसन्न होना हमारा स्वभाव नहीं है, यदि कमजोरी के कारण कदाचित् ऐसा होता भी है तो वह हमारी भूल होगी।

ह्न गागर में सागर, पृष्ठ-55

वर्ष : 35, अंक : 11 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

सितम्बर (प्रथम), 2012 (वीर नि. संवत्-2538) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

साप्ताहिक गोष्ठियाँ सम्पन्न

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा होनेवाली साप्ताहिक रविवारीय गोष्ठियों की शृंखला में **दिनांक 19 अगस्त** को **'जैनदर्शन के आलोक में पूजन का महत्त्व'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता पण्डित रमेशचन्दजी जैन लवाणवालों ने की। संचालन सुमित जैन एवं अनुभूति जैन ने किया। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय वर्ग से अक्षय उभेगाँव तथा शास्त्री वर्ग से मयंक जैन अमरमऊ को चुना गया।

दिनांक २६ अगस्त को **'घातिया कर्मों का स्वरूप : एक अनुशीलन'** विषय पर आयोजित गोष्ठी की अध्यक्षता ब्र.यशपालजी जैन ने की। मुख्य-अतिथि के रूप में श्री ताराचन्दजी सौगानी मंचासीन थे। सभा का संचालन सनत जैन एवं विवेक गडेकर ने किया। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय वर्ग से अमन जैन तथा शास्त्री वर्ग से कुलभूषण अंबेकर को चुना गया।

इस अवसर पर ब्र. यशपालजी जैन ने अपने उद्बोधन में विद्यार्थियों को गम्भीरतापूर्वक करणानुयोग के अध्ययन करने की प्रेरणा दी। श्री सौगानीजी ने कहा कि 5 मिनिट में अपने विषय को व्यवस्थित करके बोलना बहुत कठिन कार्य है, उन्होंने विद्यार्थियों की इस कला की सराहना करते हुये जीवन पर्यंत तत्त्वज्ञान में लगे रहने की प्रेरणा दी।

दोनो गोष्ठियों का संयोजन विवेक जैन भिण्ड एवं नवीन जैन ने तथा आभार प्रदर्शन महाविद्यालय के अधीक्षक श्री सोनूजी शास्त्री ने किया।

युवा शिविर सम्पन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट द्वारा दिनांक 10 से 12 अगस्त तक युवा वर्ग के लिये **'आओ जानें जैन धर्म'** के अंतर्गत त्रिदिवसीय **क्रमबद्धपर्याय** शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर जयपुर से पधारे युवा विद्वान पण्डित संजीवकुमारजी गोधा ने तीन दिनों में लगभग 9 घण्टे कक्षा के माध्यम से क्रमबद्धपर्याय को चारों अनुयोगों के माध्यम से सिद्ध किया।

शिविर में लगभग 150 युवक-युवतियों ने भाग लिया। इन सहित लाभ लेनेवालों की संख्या 300 से अधिक रही। व्यवस्था की दृष्टी से युवावर्ग के बैठने के लिये पृथक् कक्ष रखा गया था। कार्यक्रम का संचालन पण्डित खेमचन्दजी जैनदर्शनाचार्य, श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री एवं श्री तपिशजी शास्त्री ने किया। आयोजन में सभी स्थानीय विद्वानों का सहयोग रहा।**ह्न सुभाष जैन**

अवश्य देखें!

समयसार पर क्रमशः प्रवचन

डॉ. भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

● यदि आपके यहाँ जी-जागरण चैनल नहीं आता है अथवा आपको समय की अनुकूलता नहीं है, तो आप इन्हीं प्रवचनों की वीडियो या ऑडियो डीवीडी हमारे जयपुर कार्यालय से मंगा सकते है।

जयपुर शिविर का हार्दिक आमंत्रण

दिनांक 21 से 30 अक्टूबर 2012 तक पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा 15वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर में आयोजित होने जा रहा है।

इस अवसर पर आपको देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर आदि अनेकों शीर्षस्थ विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

आप सभी को अपने इष्ट मित्रों सहित पधारकर धर्मलाभ लेने हेतु हमारा भावभीना हार्दिक आमंत्रण है।

जो महानुभाव शिविर का लाभ लेने हेतु जयपुर पधार रहे हैं, वे अपने आगमन की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें, ताकि आवास व भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके।

सम्पादकीय - 83

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा – १४८

विगत गाथा में द्रव्यबंध एवं भाव का स्वरूप समझाया।

अब इस गाथा में बंध के बहिरंग एवं अंतरंग का स्वरूप कहते हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है ह्न

जोगणिमित्तं गहणं जोगो मणवयणकायसंभूदो।
भावणिमित्तो बंधो भावो रदिरागदोसमोहजुदो।।१४८।।

(हरिगीत)

है योग हेतुक कर्म आस्रव, योग तन-मन जनित है।
है भाव हेतुक बन्ध अर भाव रतिरुष सहित है।।१४८।।

कर्मग्रहण का निमित्त योग है। योग मन-वचन-काय जनित हैं। बंध का निमित्त भाव है; भाव राग-द्वेष-मोह से युक्त आत्म परिणाम है।

आचार्य अमृतचन्द्र टीका में कहते हैं कि कर्म पुद्गलों का जीव के प्रदेशों के साथ एक क्षेत्र में स्थित होना बंध है, उसका निमित्त योग है। योग अर्थात् मन-योग-वचन योग व काय योग ह्न ये कर्मबंध में निमित्त हैं। भावार्थ यह है कि कर्मबंध पर्याय के चार प्रकार हैं ह्न प्रकृति बंध, प्रदेश बंध, स्थिति बंध और अनुभाग बंध। इनमें स्थिति अनुभाग ही विशेष हैं, प्रकृति प्रदेश गौण हैं; क्योंकि स्थिति-अनुभाग के बिना कर्मबन्ध पर्याय नाममात्र ही रहता है। इसलिए यहाँ प्रकृति-प्रदेशबंध का मात्र 'ग्रहण' शब्द से कथन किया है। और स्थिति-अनुभाग बन्ध का ही 'बंध' शब्द से कथन है।

इसी के भाव को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहा है ह्न

(दोहा)

करम ग्रहण है जोग करि, जोग वचन-मन-काय।
भाव-हेतु थिति बंध है, रागादिक उपजाय।।१५९।।

(सवैया इकतीसा)

काय-बाक-मनो रूप बरगनावलंबी है,
आतम-प्रदेस बंध जोग नाम कहना।
तिनका निमित्त पाय कर्मपुंज आवै धाय,
आतम-प्रदेस विषै एकमेव गहना।।
राग-दौष-मोह रूप जीव-भाव कारन तैं,
थिति का प्रबन्ध होइ जेता काल रहना।
बहिरंग-हेतु जोग अंतरंग जीवभाव,
दौनौ कै पिछानै सेती, कर्मपुंज दहना।।१६०।।

(दोहा)

आप भूल की भूल तैं, भूला सब संसार।
भूलि भूल जब लखि परा, तब पाया भवपार।।१६१।।

कवि कहते हैं कि द्रव्य कर्मों का ग्रहण योगों से होता है तथा योग मन-वचन-काय की प्रवृत्तिरूप है। ये भाव कर्म हेतु हैं। भावकर्म रागादि की उत्पत्ति रूप हैं। उनका निमित्त पाकर पुनः कर्म वर्गणायें आती हैं और आत्मा के प्रदेशों के साथ बंध जाती हैं। आत्मा के राग-द्वेष-मोह उनमें कारण होते हैं, उनसे स्थिति बंध होता है। इसप्रकार कर्मबंध में बहिरंग हेतु तथा अन्तरंग में हेतु जीव के भाव होते हैं। दोनों की यथार्थ पहचान से कर्म नष्ट हो जाते हैं।

गुरुदेव श्री कानजीस्वामी अपने प्रवचन में कहते हैं कि जड़ कर्म अपनी योग्यता से बंधते हैं, उस बंध के दो कारण हैं ह्न (१) अंतरंग कारण (२) बहिरंग कारण। योग को बहिरंग कारण कहते हैं तथा राग-द्वेष-मोह को अन्तरंग कारण कहते हैं। आत्मा के प्रदेशों का कम्पन योग है, उसमें मन-वचन-काय निमित्त हैं। वे योग नवीन कर्मों के आने में बहिरंग निमित्त कारण हैं तथा मोह-राग-द्वेष नवीन कर्मों के आने में अंतरंग कारण हैं। यद्यपि दोनों का कार्य भिन्न-भिन्न है।

योग का निमित्त पाकर पुद्गल कर्म जीव के प्रदेशों में परस्पर एक क्षेत्रावगाहपने ग्रहण होते हैं। वहाँ योग बहिरंग कारण है तथा मोह-राग-द्वेष अंतरंग कारण है। परवस्तु अनुकूल या प्रतिकूल नहीं है, किन्तु 'यह वस्तु अनुकूल है तथा वह वस्तु प्रतिकूल है ह्न ऐसा मोह-राग-द्वेष भाव बंध है और यह राग-द्वेष, मोह द्रव्य कर्मबंध का अन्तरंग कारण है।''

इसप्रकार द्रव्य कर्मबंध के अन्तरंग बहिरंग कारणों की चर्चा हुई।●

गाथा – १४९

अब प्रस्तुत गाथा में मिथ्यात्वादि द्रव्य पर्यायों को भी बंध के बहिरंग कारणपने का कथन करते हैं। मूल गाथा इसप्रकार है ह्न

हेदू चदुव्वियप्पो अट्ठवियप्पस्स कारणं भणिदं।
तेसिं पि य रागादी तेसिमभावे ण बज्झंति।।१४९।।

(हरिगीत)

प्रकृति प्रदेश आदि चतुर्विधि कर्म के कारण कहे।
रागादि कारण उन्हें भी, रागादि बिन वे ना बंधे।।१४९।।

आचार्य श्री कुन्दकुन्द देव मूल गाथा में कहते हैं कि द्रव्य मिथ्यात्व आदि चार प्रकार के हेतु जो आठ प्रकार के कर्मों के कारण कहे गये हैं; उनमें भी जीव के रागादि भाव कारण हैं; उन रागादि भावों के अभाव में जीव नहीं बंधते।

आचार्य श्री अमृतचन्द्र देव टीका में कहते हैं कि अन्य शास्त्रों में भी मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योग ह्न इन चार प्रकार के द्रव्य हेतुओं को अर्थात् द्रव्य प्रत्ययों को आठ प्रकार के कर्मों के हेतु जीव के रागादिक हैं; क्योंकि रागादि भावों का अभाव होने से द्रव्य मिथ्यात्व, द्रव्य असंयम, द्रव्य कषाय और द्रव्य योग के सद्भाव में भी जीव बंधते नहीं हैं। इसलिए रागादि भावों का अंतरंग हेतुपना होने के कारण निश्चय से बंध हेतुपना है।

कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं ह्न

(दोहा)

अष्ट करम-कारण कह्या, हेतु चारि परकार।
तिन कारण रागादि हैं, इन विन बंध निवार।।१६२।।

(सवैया इकतीसा)

आठ कर्म कारन है मिथ्या आदि चारि भेद,
ताका फुनि और हेतु राग आदि जानना।
रागादिक भाव बिना कर्मबन्ध होई नाहिं,
मिथ्या आदि उदै हेतु बाहर का मानना।।
तातैं राग-दोष-मोह अंतरंग कारन है,
निहचै सौ बंध हेतु इनही कौं ठानना।

इनकै अभाव सेती मोख का स्वभाव सधै,
काललब्धि आये सेती इनका पिछानना।।१६३।।

यहाँ कवि कहते हैं कि मिथ्यात्व आदि पुराने द्रव्यकर्म नवीन द्रव्य कर्म बंध में कारण होते हैं, इनके निमित्त से जीव में मोह-राग-द्वेष होते हैं। रागादि के बिना कर्म बंध नहीं होते, इसकारण राग-द्वेष-मोह अन्तरंग कारण हैं, इनसे ही ज्ञान कर्म बंधते हैं। इनके अभाव से मोक्ष की साधना होती है, काललब्धि आवे इनका सबकी पहचान स्वतः हो जाती है।''

गुरुदेव श्री कानजीस्वामी अपने व्याख्यान[१] में कहते हैं कि ''पुराने द्रव्यकर्म (द्रव्य मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योग) ये चारों द्रव्यकर्म नवीन आठ प्रकार के कर्मबंध में निमित्त कारण होते हैं। चारों द्रव्य प्रत्ययों के निमित्त कारण से जीव के मोह राग-द्वेषादि विभावभाव होते हैं। जीव के विभाव भाव न हों तो पुराने कर्म के उदय को निमित्त नहीं कहते। मोह-राग-द्वेष के निमित्त से नवीन कर्मों का बंध होता है तथा उनका विनाश होने से नये कर्म नहीं बंधते हैं।

जीव जब अपने स्वभाव से चूककर पर में सुखबुद्धि करके मोह-राग-द्वेष करता है, उस समय उसे उस कारण पुराने जड़कर्मों का उदय नवीन कर्मों के आने में निमित्त कहलाते हैं। जब जीवों के उपादान की वैसी योग्यता होती है, तब तदनुकूल द्रव्यकर्म के उदय को निमित्त कहा जाता है। वस्तुतः तो दोनों स्वतंत्र हैं। स्वतंत्र होते हुए दोनों में ऐसा ही निमित्त-नैमित्तिक संबंध होता है।

जड़ नये कर्म वस्तुतः तो स्वयं की तत्समय की योग्यता से बंधते हैं, परन्तु जड़कर्म के आने में योगों का कम्पन होता है तथा राग-द्वेष भाव कर्म होते हैं।''

मिथ्यात्व, असंयम व कषाय ह्न ये तीनों मोहकर्म में आते हैं तथा योग नाम कर्म का भेद है। इसलिए पुराने मोहकर्म व नामकर्म का उदय नये ज्ञानावरणादि आठ कर्मों में बहिरंग कारण हैं, ऐसा यहाँ बताया है। ●

मोक्षपदार्थ का व्याख्यान

गाथा - १५०-१५१

अब प्रस्तुत गाथाओं में भाव मोक्ष का स्वरूप कहते हैं। मूल गाथा इसप्रकार है ह्न

हेदुमभावे णियमा जायदि णाणिस्स आसवणिरोधो।
आस्रवभावेण विणा जायदि कम्मस्स दु णिरोधो।।१५०।।
कम्मस्साभावेण य सव्वण्हू सव्वलोगदरिसी य।
पावदि इंदियरहिदं अव्वाबाहं सुहमणंतं।।१५१।।

(हरिगीत)

मोहादि हेतु अभाव से ज्ञानी निरास्रव नियम से।
भावास्रवों के नाश से ही कर्म का आस्रव रुके।।१५०।।
कर्म आस्रवरोध से सर्वत्र समदर्शी बने।
इन्द्रिसुख से रहित अव्याबाध सुख को प्राप्त हों।।१५१।।

मोह, राग-द्वेषरूप हेतुओं का अभाव होने से ज्ञानी को नियम से आस्रव का निरोध होता है और आस्रव भाव के अभाव में कर्म का निरोध होता है तथा कर्मों का अभाव होने से वह सर्वज्ञ-सर्वदर्शी होता हुआ इन्द्रियरहित, अव्याबाध अनन्त सुख को प्राप्त करता है।

आचार्य श्री अमृतचन्द स्वामी टीका में कहते हैं कि ''आस्रव का हेतु वास्तव में जीव का मोह-राग-द्वेष रूप भाव है। ज्ञानी के मोहादिक का अभाव होने से आस्रव भाव का अभाव होता है। आस्रव भाव का अभाव होने से कर्मों का अभाव होता है। कर्म का अभाव होने से सर्वज्ञता, सर्वदर्शिता और अव्याबाध, अतीन्द्रिय अनन्त सुख होता है। यही जीवन्मुक्त नामक भाव मोक्ष है।

यहाँ जिस भाव का कथन करना है, वह भाव वास्तव में संसारी को अनादि काल से मोहनीय कर्म के उदय के कारण अशुद्ध है, द्रव्य कर्मास्रव का हेतु हैं; परन्तु वह ज्ञप्ति क्रिया रूप भाव ज्ञानी को मोह-राग-द्वेष परिणति की हानि को प्राप्त होता है, इसलिए उसको आस्रव भाव का निरोध होता है।

जिसे आस्रव भाव का निरोध हुआ है, उस ज्ञानी को मोह क्षय द्वारा अत्यन्त निर्विकारपना होने से अनादिकाल से अनन्त चैतन्य और अनंतवीर्य मुँदा हुआ है, वह ज्ञानी (क्षीण मोह गुण स्थान में शुद्ध ज्ञप्ति क्रिया रूप से अन्तर्मुहूर्त व्यतीत करके युगपद ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय का क्षय होने से कथंचित् कूटस्थ (अचल) ज्ञान को प्राप्त करता है। इसप्रकार उसे ज्ञप्ति क्रिया के रूप में क्रम प्रवृत्ति का अभाव होने से भावकर्म का विनाश होता है। इसलिए कर्म का अभाव होने पर वह वास्तव में भगवान सर्वज्ञ, सर्वदर्शी तथा इन्द्रिय व्यापार रहित, अव्याबाध अनन्त सुखवाला सदैव रहता है।

इसप्रकार यह जो यहाँ कहा है? भाव मोक्ष का स्वरूप है तथा द्रव्य मोक्ष का हेतुभूत परम संवर का स्वरूप है।

गुरुदेव श्री कानजीस्वामी अपने २१४ नं. के श्री सद्गुरु प्रवचन प्रसाद में प्रकाशित व्याख्यान में कहते हैं कि ह्न आत्मा शुद्ध चैतन्य मूर्ति अनादि अनन्त है, उसके ज्ञान से चूककर रागादि विकार करना संसार का कारण है तथा उस विकार का अभाव करके पूर्ण शुद्धदशा प्रगट करना मोक्ष है। शरीर को अपना मानना तथा पुण्य-पाप के भाव जो दुःखदायक हैं, संसार के कारण हैं, उन्हें हितरूप मानना भ्रांति है। अनुकूल वस्तुओं में राग करना अज्ञान है।

अज्ञानी जीव ऐसा मानता है कि ह्न शरीर की अवस्था मुझसे हुई है, पुण्य का भाव हितरूप है, ऐसा मानकर राग करता है। आत्मा देह से भिन्न तत्त्व है तो भी अज्ञानी ऐसा मानता है कि ह्न देह नीरोग स्वस्थ हो तो ही धर्म हो सकता है। वस्तुतः परपदार्थ आत्मा के नहीं हैं। वे परपदार्थ तो ज्ञानी के ज्ञेय मात्र हैं। ऐसे अपने अन्तर स्वभाव में स्थिर हो जाय तो आस्रव नहीं होता तथा आते हुए कर्म भी रुक जाते हैं। कर्मों का सर्वथा नाश होने पर निरावरण सर्वज्ञ पद प्रगट हो जाता है।

प्रसाद नं. २१६ में गुरुदेव श्री कहते हैं कि ह्न आत्मा ज्ञानस्वभावी वस्तु है। यदि वह राग-द्वेष में अटके तो संसार सागर में डूबता है और यदि आत्मा अपने चैतन्यस्वभावी शुद्ध आत्मा में एकाग्रता करता है तो निर्मोही होकर केवलज्ञानी होता है।

जिनके राग होता है, उनका ज्ञानोपयोग क्रमशः होता है तथा केवलज्ञानी का ज्ञान समस्त लोकालोक को (स्व-पर) को एक साथ जानता है। यहाँ मोक्षतत्व की बात बता रहे हैं। अतः कहते हैं कि जो मोक्ष में उपयोग को क्रमशः होता हुआ मानता है, उसका वह मानना ठीक नहीं है; क्योंकि केवली भगवान को ज्ञान क्रिया की प्रवृत्ति क्रमशः नहीं होती, सर्वज्ञ-अक्रम से एकसाथ समस्त लोकालोक जानते-देखते हैं। ●

दशलक्षण महापर्व कहाँ-कौन ?

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ जानेवाले विद्वानों की सूची विगत अंग में विस्तार से प्रकाशित कर दी गई थी, जिसमें दिनांक 13 अगस्त तक लिये गये निर्णयानुसार 326 स्थानों की सूची प्रकाशित की गई थी। अब यहाँ उसके बाद में निश्चित किये गये 105 स्थानों की सूची प्रकाशित की जा रही है। इसप्रकार अभी तक 431 स्थानों पर विद्वान निश्चित हो चुके हैं, एवं अभी भी अनेक स्थानों के आमंत्रण आ रहे हैं।

मध्यप्रदेश

1. करैरा : पण्डित नितिन शास्त्री, जयपुर 2. **गंजबासौदा (त्रिमूर्ति जैन मन्दिर)** : पण्डित आकाश शास्त्री, खनियांधाना 3. **गुना (शान्तिनाथ मन्दिर)** : पण्डित अमित शास्त्री, भोपाल 4. **बनखेडी :** पण्डित सचिन शास्त्री, जयपुर 5. **चन्दला** : पण्डित हेमचन्द्र शास्त्री, जयपुर 6. **सिरोंज** : पण्डित नियम शास्त्री, जयपुर 7. **कुचडौद** : पण्डित आशीष शास्त्री, जयपुर 8. **शहापुर (भटौनी)** : पण्डित संतोष वैद्य, खनियांधाना, पण्डित सौरभ शास्त्री, जयपुर 9. **नागदा (जंक्शन)** : पण्डित प्रीतिंकर शास्त्री, जयपुर 10. **माहिदपुर** : पण्डित चेतन शास्त्री, जयपुर 11. **बेडिया** : पण्डित अंकित जैन, इन्दौर 12. **धर्मपुरी :** पण्डित प्रमोद शास्त्री, गढ़ी 13. **अमायन** : पण्डित नवीन शास्त्री, जयपुर 14. **निवाडी** : पण्डित प्रशांत शास्त्री, जयपुर 15. **बिजुरी** : पण्डित अभय शास्त्री, जयपुर 16. **घुवारा** : पण्डित समर्पन शास्त्री, जयपुर 17. **ग्वालियर (फाल्के बाजार)** : पण्डित निखिन्न शास्त्री, कोतमा (विधान हेतु) 18. **द्रोणगिरी** : ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन', ब्र. महेन्द्रकुमारजी शास्त्री, इन्दौर, पण्डित मनोजजी शास्त्री, करेली, पण्डित कैलाशचन्दजी, महरौली 19. **सागर (बालकव्यू)** : पण्डित सन्मति शास्त्री, मोदी 20. **बदनावर** : पण्डित विश्वास शास्त्री, बड़ामलहरा

महाराष्ट्र

1. डासाला : पण्डित सुमतिनाथ शास्त्री, जयपुर 2. **रिसोड** : पण्डित कुलभूषण शास्त्री, जयपुर 3. **वाशिम (सैतवाल मन्दिर)** : पण्डित स्वप्नील शास्त्री, ध्रुवधाम 4. **कोल्हापुर** : पण्डित चैतन्य शास्त्री, कोटा 5. **सावदा** : पण्डित जीवराजजी, नासिक 6. **कबनूर** : पण्डित दीपक शास्त्री, अथणे 7. **नागपुर** : डॉ. मनीष शास्त्री, खतौली 8. **मुम्बई (मलाड)** : पण्डित अभिनय शास्त्री, जबलपुर 9. **नागपुर (विधान)** : पण्डित मयंक शास्त्री, अमरमऊ जयपुर 10. **जत** : पण्डित उमेश घोसरवाड़े 11. **सातारा** : पण्डित मिलिन्द शास्त्री, कबनूर 12. **रांगोली** : पण्डित संदीप चौगुले शास्त्री 13. **व्हन्नूर** : पण्डित सन्दीप पाटील शास्त्री 14. **वसगडे**: पण्डित कीर्तिकुमार पाटील, शास्त्री 14. **हेरले** : पण्डित शीतल शास्त्री, अलमान 15. **इच्चलकरंजी** : पण्डित अनिल शास्त्री, अलमान 16. **इच्चलकरंजी** : पण्डित सुभाषजी शास्त्री, बखेड़ी बेलगांव 17. **कोरेगांव** : पण्डित दीपक मंजलेकर शास्त्री 18. **कोल्हापुर** : पण्डित प्रवीण पाटील शास्त्री 19. **हिंगोली (जिजा माता नगर)** : पण्डित श्रुतेशजी शास्त्री, सातपुते 20. **मुम्बई (अंधेरी)** : पण्डित अभिनय जैन शास्त्री, कोटा 21. **बालचन्दनगर** : पण्डित अक्षय शास्त्री, जयपुर 22. **आकोट** : 23. **मुम्बई (अंधेरी)** : पण्डित प्रशांत एवं प्रकाश उखलकर, शास्त्री

राजस्थान

1. **कानोड** : पण्डित नील शास्त्री, जयपुर 2. **किशनगढ़** : पण्डित विवेक शास्त्री, अमरमऊ जयपुर 3. **सेमारी** : पण्डित निलय शास्त्री, जयपुर 4. **कुरावड़** : पण्डित प्रतीक शाह शास्त्री, जयपुर 5. **जयथल** : पण्डित जिनकुमार शास्त्री, जयपुर 5. **साकरोदा** : पण्डित विवेक शास्त्री, गडेकर जयपुर 6. **लाम्बाखोह** : पण्डित सचिन शास्त्री, सागर जयपुर 7. **उदयपुर सेक्टर–5** : पण्डित सौरभजी शास्त्री, गढ़ाकोटा (कोटा) 8. **बोहेडा** : पण्डित प्रवीण शास्त्री, अमरमऊ जयपुर 9. **झालीजी का बराना** : पण्डित अखिलेश शास्त्री, जयपुर 10. **वल्लभनगर** : पण्डित सुमित जैन शास्त्री, जयपुर 11. **कून** : पण्डित आशीष शास्त्री, भिण्ड, जयपुर 12. **डबोक** : पण्डित रवि शास्त्री, जयपुर 13. **अलवर (मुमुक्षु मण्डल) विधान**: पण्डित अमोल शास्त्री महाजन, जयपुर 14. **कुशलगढ़ (शान्तिनाथ)** : पण्डित भूषण शास्त्री, जयपुर 15. **वेर** : पण्डित पदमकुमारजी जैन, कोटा 16. **जयपुर (जयजवान कालोनी)** : पण्डित पीयूषजी शास्त्री, छतरपुर 17. **पीसांगन** : पण्डित समकित मोकलपुर शास्त्री, जयपुर 18. **बयाना (भरतपुर)** : पण्डित मयंक जैन शास्त्री ठगन, जयपुर 19. **केलवाड़ा** : पण्डित शुभम् जैन, सागर 20. **जयपुर (टोडरमल स्मारक)** : पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, जयपुर 21. **जयपुर (बड़े दीवानजी का मन्दिर)** : पण्डित सोनूजी शास्त्री, जयपुर 22. **जयपुर (मालवीयनगर सेक्टर–10)** : पण्डित विनयचन्दजी पापड़ीवाल, जयपुर 23. **सांगानेर (अल्का नर्सिंग होम)** : पण्डित डॉ. प्रभाकरजी सेठी, जयपुर 24. **जयपुर** : पण्डित डॉ. भागचन्दजी शास्त्री, जयपुर 25. **जयपुर** : पण्डित राजेशजी शास्त्री, जयपुर 26. **जयपुर (महावीर उच्च मा. विद्यालय)** : पण्डित संतोष शास्त्री, बक्स्वाहा, जयपुर 27. **जयपुर (महावीर पब्लिक स्कूल)** : पण्डित अभिषेक शास्त्री, कोलारस 28. **जयपुर (सिवाड मन्दिर)** : पण्डित सौरभ शास्त्री, अमरमऊ 29. **थानागाजी** : पण्डित राजीव शास्त्री, भिण्ड 30. **झालावाड़** : पण्डित अजय जैन, ध्रुवधाम

उत्तरप्रदेश

1. गुरसराय : पण्डित अंकित शास्त्री, ध्रुवधाम, पण्डित निखिल शास्त्री, ध्रुवधाम 2. **कुर्राचितपुर** : पण्डित नरेश शास्त्री, भगवां, जयपुर 3. **करहल** : पण्डित पवनकुमारजी शास्त्री, मुम्बई 4. **केराना** : पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित शुभम् शास्त्री 5. **लखनऊ** : पण्डित श्रेयांसकुमारजी शास्त्री, जबलपुर 6. **झांसी** : पण्डित अमितेन्द्र शास्त्री, जयपुर 7. **कानपुर (मुमुक्षु मण्डल)** : पण्डित पंकज शास्त्री, बमनी, जयपुर 8. **गूढ़ा** : पण्डित अनिल शास्त्री, भिण्ड 9. **राजा का ताल** : पण्डित अखलेश शास्त्री, ध्रुवधाम 10. **खतौली (पद्मप्रभ जिनालय)**

: पण्डित दीपक शास्त्री, ध्रुवधाम, पण्डित राहुल शास्त्री, ध्रुवधाम 11. **छपरौली (दिल्ली से)** 12. **अलीगढ़ (मंगलायतन)** : पण्डित डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री 13. **सकीट** : पण्डित विनीत शास्त्री, जयपुर

गुजरात

1. रखियाल : पण्डित आशु शास्त्री, झालरापाटन, जयपुर 2. **मोरबी** : पण्डित सुमित शास्त्री, जयपुर 3. **जहेर** : पण्डित सचिन शास्त्री, गडखोडा, जयपुर 4. **नवसारी** : पण्डित साकेत शास्त्री, जयपुर 5. **अहमदाबाद (ओढव)** : विदुषी अनुभूति शास्त्री, गुना 6. **वापी** : पण्डित अनुराग शास्त्री, भगवां 7. **सुरेन्द्रनगर** : पण्डित रमेशचन्दजी मंगल, सोनगढ़ 8. **अहमदाबाद (गोमतीपुर)** : पण्डित रीतेश शास्त्री, मेघाणीनगर

अन्य प्रान्त

1. कोलकाता (विधान हेतु) : पण्डित समकित मोदी, शास्त्री, कोटा 2. **चम्पापुर** : पण्डित जागेश शास्त्री, जबेरा 3. **अम्बिकापुर (छत्तीसगढ़)** : पण्डित नेमीचन्द जैन शास्त्री, ध्रुवधाम 4. **हैदराबाद :** डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल, अमलाई 5. **गुड़गांव** : पण्डित आशीष शास्त्री, मडावरा 6. **रायपुर** : पण्डित रामनरेश शास्त्री, लाडनू 7. **रायपुर** : पण्डित राजेश शास्त्री, गुना 8. **तिलगा (छत्तीसगढ़)** : पण्डित नितिन शास्त्री, खडैरी 9. **खडगपुर** : पण्डित गोम्मटेश्वर शास्त्री, हेरले 10. **रिसरा** : पण्डित संकेत शास्त्री, जयपुर 11. **जीरा (पंजाब)** : पण्डित देवांग गाला शास्त्री, मुम्बई

पूर्व प्रकाशित सूची में परिवर्तित नाम

मध्यप्रदेश – 1. कोलारस (चौधरी मोहल्ला) : पण्डित जीवेश शास्त्री, जयपुर 2. **ग्वालियर (सोडा का कुआ)** : पण्डित आशीष शास्त्री, टीकमगढ़ 3. **अम्बाह** : पण्डित पदमचन्दजी जैन, कोटा 4. **मौ** पण्डित निर्मलकुमारजी एडवोकेट, एटा 5. **मन्दसौर (गोल चौराहा)** : डॉ. नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री, जयपुर 6. **बीड** पण्डित पीयूष शास्त्री, ध्रुवधाम 7. **सनावत** : पण्डित शीतल पाण्डे, उज्जैन 8. **करेली (छात्र विद्वान)** : पण्डित सन्देश शास्त्री, जयपुर 9. **सिलवानी (छात्र विद्वान)** : पण्डित योगेश शास्त्री, जयपुर

महाराष्ट्र – 1. पुणे (स्वाध्याय मण्डल) : पण्डित दीपेश शास्त्री, अमरमऊ, पण्डिक प्रखर शास्त्री, जयपुर (छात्र विद्वान) 2. **हिंगोली** : पण्डित संजयकुमारजी सेठी, जयपुर 3. **माळसिरस** : पण्डित अभिजीत शास्त्री, जयपुर 4. **वर्धा** : पण्डित दिलीपजी महाजन, मालेगांव 5. **अकोला** : पण्डित डॉ. विनोद चिन्मय शास्त्री, विदिशा 6. **रामटेक** : पण्डित रूपेन्द्र शास्त्री, जयपुर

राजस्थान – 1. प्रतापगढ़ (मुख्य मन्दिर) : पण्डित अनुपम शास्त्री, जयपुर 2. **देवली (चन्द्रप्रभ मंदिर)** : पण्डित विकास शास्त्री, मौ 3. **देवली (आदिनाथ मंदिर)** : पण्डित संजय शास्त्री, खनियांधाना

महिला फैडरेशन की त्रैमासिक रिपोर्ट

नागपुर (महा.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन महिला युवा फैडरेशन द्वारा किये गये कार्यों की त्रैमासिक रिपोर्ट प्रस्तुत की जा रही है ह्न

1. दिनांक 23 मई को महिला युवा फैडरेशन का नवीन चुनाव सम्पन्न हुआ, जिसके समाचार जून (प्रथम) अंक में प्रकाशित हो चुके हैं।

2. दिनांक 2 जून को ब्र. आरती दीदी छिन्दवाड़ा की मांगलिक उपस्थिति में शपथ–ग्रहण समारोह सम्पन्न हुआ।

3. दिनांक 1 जुलाई को मीटिंग में पदाधिकारियों को उनकी योग्यतानुसार कार्य सौंपे गये एवं 'वीरशासन जयन्ती पर्व क्या है ?' एवं द्वादशांग की परिपाटी के सम्बन्ध में विशेष कक्षा का आयोजन किया गया।

4. दिनांक 31 जुलाई को कोटेशन सजाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें तीन ग्रुप – पाठशाला, विद्यानिकेतन एवं मुमुक्षु सम्मिलित हुये। कुल 49 प्रतियोगियों ने भाग लिया। तीनों ग्रुप में से प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को रक्षाबन्धन के दिन पुरस्कार वितरित किये गये।

5. दिनांक 1 अगस्त को प्रात: 8 बजे वात्सल्य के प्रतीक रक्षाबन्धन पर्व के उपलक्ष्य में अहिंसा रैली का आयोजन किया गया। इसमें सैकड़ों लोग सम्मिलित हुये। सभी मुमुक्षु अहिंसा की प्रतीक एक झण्डी लिये हुये थे। यह रैली शहर के प्रमुख मार्गों से निकाली गई। सर्वत्र प्रमुख चौराहों पर अहिंसा रैली का परिचय प्रदान किया गया। इस अवसर पर पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर के प्रवचनों का भी लाभ मिला।

6. दिनांक 2 अगस्त को रक्षाबन्धन पर्व के उपलक्ष्य में कु. दीक्षा जैन, कु. अनुभूति जैन, कु. कृति जैन एवं मंगलार्थी संयम जैन ने पाठशाला के छात्रों के माध्यम से सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। स्थानीय विद्वान डॉ. राकेशजी शास्त्री, पण्डित विपिनजी शास्त्री एवं पण्डित प्रवीणजी शास्त्री ने सभी प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया।

संस्था की गतिविधियों से डॉ. स्वर्णलता जैन ने अवगत कराया। कार्यक्रम का संचालन पण्डित मनीषजी शास्त्री सिद्धांत एवं पण्डित आदेशजी शास्त्री ने किया।

4. **वैर** : पण्डित बृजेन्द्र शास्त्री, जयपुर 5. **वल्लभनगर** : पण्डित सुमित शास्त्री, जयपुर

उत्तरप्रदेश – 1. रूढ़की : पण्डित जिनेन्द्र शास्त्री, उदयपुर 2. **मैनपुरी** : पण्डित अंकित शास्त्री,खनियांधाना 3. **कुरावली** : पण्डित कमलेशकुमारजी शास्त्री, मौ, पण्डित शुभम् शास्त्री, ध्रुवधाम 4. **भौगाँव** : पण्डित संतोष शास्त्री, अम्बड

गुजरात – 1. अहमदाबाद (पार्श्वनाथ चैत्यालय) : पण्डित अनेकान्त शास्त्री, जयपुर

अन्य प्रान्त – 1. पानीपत : ब्र. रविकुमारजी, ललितपुर 2. **देहरादून (विकासनगर)** : पण्डित विकास शास्त्री, ग्वालियर ●

रहस्य : रहस्यपूर्ण चिट्ठी का

100 वाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

महाशास्त्र तत्त्वार्थसूत्र में कहा गया है कि जिसप्रकार पागल माताको माता कहे, तब भी उसका ज्ञान सम्यक् नहीं; क्योंकि वह माता का स्वरूप नहीं जानता। इसीप्रकार वस्तुस्वरूप से अनभिज्ञ होने से मिथ्यादृष्टि का आत्मा को आत्मा और पर को पर कहनेवाला ज्ञान भी मिथ्या ही है।

अप्रयोजनभूत लौकिक वस्तुओं के बारे में ज्ञानी जीव भले ही असत्य जाने, पर ज्ञानी के तत्संबंधी ज्ञान को औदयिक अज्ञान तो कह सकते हैं, पर क्षायोपशमिक अज्ञान नहीं; क्योंकि क्षायोपशमिक अज्ञान तो मिथ्याज्ञान का नाम है। सम्यग्दृष्टि का सभी क्षायोपशमिक ज्ञान सम्यग्ज्ञान ही है।

पण्डितजी तो यहाँ तक कहते हैं कि **वह केवलज्ञान का अंश है; क्योंकि सम्यग्दृष्टि के मति-श्रुतज्ञानरूप सम्यग्ज्ञान की और केवलज्ञानी के केवलज्ञानरूप सम्यग्ज्ञान की जाति एक है।**

इसके बाद पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं ह्न

''तथा इस सम्यक्त्वी के परिणाम सविकल्प तथा निर्विकल्परूप होकर दो प्रकार प्रवर्त्तते हैं। वहाँ जो परिणाम विषय-कषायादिरूप व पूजा, दान, शास्त्राभ्यासादिकरूप प्रवर्त्तता है, उसे सविकल्प जानना।

यहाँ प्रश्न ह्न शुभाशुभरूप परिणमित होते हुए सम्यक्त्व का अस्तित्व कैसे पाया जाय ?

समाधान ह्न जैसे कोई गुमाश्ता सेठ के कार्य में प्रवर्त्तता है, उस कार्य को अपना भी कहता है, हर्ष-विषाद को भी प्राप्त होता है, उस कार्य में प्रवर्त्तते हुए अपनी और सेठ की जुदाई का विचाार नहीं करता; परन्तु अंतरंग श्रद्धान ऐसा है कि यह मेरा कार्य नहीं है।

ऐसा कार्य करता गुमाश्ता साहूकार है। यदि वह सेठ के धन को चुराकर अपना माने तो गुमाश्ता चोर होय।

उसीप्रकार कर्मोदयजनित शुभाशुभरूप कार्य को करता हुआ तद्रूप परिणमित हो; तथापि अंतरंग में ऐसा श्रद्धान है कि यह कार्य मेरा नहीं है। यदि शरीराश्रित व्रत-संयम को भी अपना माने तो मिथ्यादृष्टि होय। सो ऐसे सविकल्प परिणाम होते हैं।''

सविकल्प परिणामों के संदर्भ में पण्डितजी का कहना है कि **शुभाशुभ भावों में प्रवृत्ति ही सविकल्प परिणाम है और शुद्धोपयोगरूपदशा ही निर्विकल्प परिणाम हैं।**

पण्डितजी के उक्त कथन में अत्यन्त स्पष्टरूप से कहा गया है कि जो परिणाम विषय-कषायादिरूप हों या पूजा, दान, शास्त्राभ्यासरूप हों; वे सभी परिणाम सविकल्प परिणाम हैं।

सम्यग्दृष्टि जीवों के चौथे गुणस्थान से लेकर छठवें गुणस्थान तक ये सविकल्प परिणाम पाये जाते हैं। इन सविकल्प परिणामों अर्थात् शुभाशुभभावों के काल में सम्यग्दर्शन का अस्तित्व कैसे रहता है ह्न इस बात को स्पष्ट करने के लिए पण्डितजी मुनीम का उदाहरण देते हैं।

मुनीम का अर्थ यहाँ मात्र हिसाब-किताब लिखनेवाला क्लर्क नहीं है, अपितु मैनेजर है; क्योंकि उस जमाने में सेठ लोग अनेक गाँवों में अपनी दुकानें या व्यापारिक कार्यालय खोल देते थे। एक व्यक्ति को उसका सम्पूर्ण भार संभला देते थे। वह एकप्रकार से वर्किंग पार्टनर होता था और दैनंदिन कार्य संबंधी सभी निर्णय लेने का अधिकार उसे रहता था। उसके आधीन अनेक कर्मचारी रहते थे। उसका सम्पूर्ण व्यवहार सेठ जैसा ही रहता था।

जिस गुमाश्ता (मुनीम) का उदाहरण पण्डितजी ने दिया है; उसका स्वरूप उन्होंने स्वयं ही स्पष्ट किया है। वे लिखते हैं कि जो सेठ की ओर से सेठ का कार्य करता हुआ, उस कार्य को अपना कार्य कहता है, लाभ-हानि होने पर हर्ष-विषाद को भी प्राप्त होता है, उस कार्य को करते समय स्वयं और सेठ के बीच की भिन्नता का विचार भी नहीं करता, पूरे अधिकार से बात करता है; पर उसके अंतरंग में श्रद्धा के स्तर पर ऐसा ज्ञान वर्तता रहता है कि यह सबकुछ मेरा नहीं है।

पण्डितजी कहते हैं कि ऐसी परिणतिवाला गुमाश्ता साहूकार है।

यहाँ गुमाश्ता साहूकार का अर्थ मुनीम और सेठ नहीं है, अपितु साहूकार गुमाश्ता अर्थात् ईमानदार विश्वसनीय मुनीम है। पण्डितजी कहते हैं कि यदि वह जैसा बोल रहा है; उसीप्रकार सचमुच मान ले तो वह साहूकार नहीं, चोर है। तात्पर्य यह है कि वह गुमाश्ता साहूकार नहीं है अर्थात् ईमानदार मुनीम नहीं है।

इसीप्रकार विषय-कषाय और शुभभावों में वर्तता हुआ सम्यग्दृष्टि जीव उस समय उन भावोंरूप ही परिणामित होता है और तदनुसार भूमिकानुसार पाप-पुण्य का बंध भी करता है; तथापि उसकी श्रद्धा निरंतर ऐसी ही बनी रहती है कि यह मेरा कार्य नहीं है; क्योंकि यदि वह शरीराश्रित उपवासादि और उपदेशादि को भी अपना कार्य माने तो सम्यग्दर्शन कायम नहीं रह सकता।

इसप्रकार सम्यग्दृष्टि जीवों के शुभाशुभभावों के काल में भी सम्यग्दर्शन कायम रहता है।

'सविकल्प अवस्था में, विशेष कर युद्ध और भोग के काल में सम्यग्दर्शन कैसे कायम रहता है ?' ह्न ऐसा प्रश्न खड़ा ही क्यों हो रहा है ?

अरे, भाई ! बात यह है कि जगतजनों को सम्यग्दृष्टि भी विषय-भोगों में और युद्धादि में मिथ्यादृष्टियों के समान ही उलझे दिखाई देते हैं। उसने शास्त्रों में जो सम्यग्दृष्टि ज्ञानियों के चरित्र पढ़े हैं; उनमें भी यही देखा है कि सम्यग्दृष्टि लोग भी भोगों में रत हैं, लड़ रहे हैं, झगड़ रहे हैं। अत: यह प्रश्न सहज ही उत्पन्न होता है।

अज्ञानीजन आत्मानुभूति और सम्यग्दर्शन को एक ही समझते हैं; इसकारण भी ऐसा प्रश्न उपस्थित होता है।

यद्यपि यह परम सत्य है कि सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति आत्मानुभूति के काल में ही होती है; तथापि यह आवश्यक नहीं है कि अनुभूति के बिना सम्यग्दर्शन का अस्तित्व ही न रहे।

आत्मानुभूति के समय सम्यग्दर्शन उत्पन्न हो जाने के बाद उपयोग आत्मा से बाहर आ जाता है, शुभभावों में चला जाता है, कालान्तर में अशुभभावों में भी चला जाता है, भोगों में चला जाता है, युद्ध में भी जा सकता है; चक्रवर्ती भरत एवं रामचन्द्र आदि के चरित्रों में यह सब मिलता भी है।

ऐसे समय में शुद्धोपयोगरूप आत्मानुभूति नहीं रहती; पर सम्यग्दर्शन कायम रहता है; क्योंकि सम्यग्दर्शन श्रद्धागुण की पर्याय है और **आत्मानुभूति ज्ञान, श्रद्धा, चारित्र, आनन्द, वीर्य आदि अनेक गुणों का परिणमन है।**

वस्तुतः बात यह है कि न मालूम हमारे चित्त में यह कहाँ से समा गया है कि आत्मानुभूति के बिना सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान का अस्तित्व ही संभव नहीं है। करणानुयोग के अनुसार चौथे गुणस्थान में होनेवाले बंध-अबंध, बंधव्युच्छत्ति, संवर, निर्जरा की जो चर्चा है; वह सम्यग्दर्शन के आधार पर है, अनुभूति के आधार पर नहीं। **चौथे गुणस्थान की भूमिका का सही स्वरूप ख्याल में नहीं होने से भी यह प्रश्न उपस्थित होता है। श्रद्धा और चारित्र के भेद को भलीभाँति न समझने के कारण भी इसप्रकार के विकल्प खड़े होते हैं।**

इसीप्रकार हमें आत्मानुभूति और सम्यग्दर्शन की इतनी महिमा आ गई है कि जिसके आश्रय से अनुभूति होती है, सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान प्रगट होता है; जिसमें अपनापन स्थापित करने का नाम सम्यग्दर्शन, जिसे निज रूप जानने का नाम सम्यग्ज्ञान और जिसमें रमने का नाम सम्यक्-चारित्रहै; वह त्रिकाली ध्रुव भगवान आत्मा भी हमारी दृष्टि से ओझल हो रहा है। **सर्वाधिक महिमावंत परमपदार्थ तो दृष्टि का विषयभूत, परमशुद्ध निश्चयनय का विषय और ध्यान का ध्येयरूप निज त्रिकाली ध्रुव भगवान आत्मा ही है। अतः हमें उसी की शरण में जाना चाहिए।** ●

चौथा प्रवचन

आत्मानुभूति और सम्यग्दर्शन को लोगों ने एक ही समझ लिया है; पर यह समझ सही नहीं है; क्योंकि शुभाशुभभाव और शुभाशुभपरिणति के काल में भी सम्यग्दर्शन कायम रहता है।

यद्यपि यह परम सत्य है कि सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति आत्मानुभूति के काल में ही होती है; तथापि सम्यग्दर्शन की सत्ता के लिए आत्मानुभूति आवश्यक नहीं है।

जिसने अभी आत्मा का अनुभव किया है, उस व्यक्ति का उपयोग आत्मा से हटकर बाह्य विषयों में, भोगों में, युद्धादि में, उपदेशादि में भी लग जावे; तब भी उसे सम्यग्दर्शन कायम रहता है; क्योंकि सम्यग्दर्शन तो श्रद्धागुण की पर्याय है और वह **सम्यग्दर्शन त्रिकाली ध्रुव निज भगवान आत्मा में अपनापन हो जाने रूप है।**

तात्पर्य यह है कि आत्मानुभूति के काल में ज्ञान ने जिसे निजरूप जाना था, श्रद्धा गुण ने जिस आत्मा में अपनापन स्थापित कर लिया था और जो उस समय ध्यान का ध्येय बना था; उस **निजात्मा में दृढ़ता से स्थापित अपनेपन का नाम ही सम्यग्दर्शन है।**

यद्यपि यह बात विगत प्रवचन में स्पष्ट की जा चुकी है; तथापि इसके संबंध में गंभीर मंथन अपेक्षित है; क्योंकि उक्त संदर्भ में विद्यमान अज्ञान की जड़ें बहुत गहरी हैं।

सम्यग्दृष्टि की सविकल्प अवस्था में जहाँ एक ओर शुभाशुभभाव और शुभाशुभपरिणति दिखाई देती है; वहीं दूसरी ओर अन्तर में मिथ्यात्व और अनंतानुबंधी कषाय के अभावरूप शुद्धपरिणति भी तो विद्यमान रहती है।

यद्यपि यह सत्य है कि सविकल्प अवस्था में शुभाशुभ परिणामों के अनुसार बंध होता है; तथापि यह भी सत्य है कि मिथ्यात्व और अनंतानुबंधी कषाय के अभावपूर्वक होनेवाली परिणति की शुद्धि के कारण मिथ्यात्वादि ४१ प्रकृतियों के बंध के अभावरूप संवर व यथायोग्य निर्जरा भी निरंतर होती रहती है।

सविकल्प अवस्था में या शुभाशुभभावों के काल में जो संवर-निर्जरा होते हैं, वे शुभाशुभभावों या शुभाशुभक्रिया से नहीं; अपितु उक्त शुद्धपरिणतिरूप अनुभव के कारण होते हैं; क्योंकि शुभाशुभभाव तो बंध के ही कारण हैं और शुभाशुभरूप शरीर की क्रिया, जड़ की क्रिया होने से न बंध का कारण है और न संवर-निर्जरा का ही कारण है।

इसप्रकार हम देखते हैं कि अनुभव दो प्रकार का है। एक शुद्धोपयोगरूप या आत्मानुभूतिरूप अनुभव और दूसरा लब्धिज्ञान और शुद्धपरिणतिरूप अनुभव।

दो प्रकार के अनुभव की चर्चा पहले प्रवचन में विस्तार से की जा चुकी है। अतः उसके विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं है।

निचली अवस्था में आत्मानुभूतिरूप अनुभव तो निरंतर नहीं रहता, भूमिकानुसार कभी-कभी ही होता है; पर शुद्धपरिणतिरूप लब्धिरूप अनुभव तो सदा विद्यमान रहता ही है। **भले ही ज्ञान के उपयोग में आत्मा कभी-कभी ज्ञेय बनता हो; तथापि लब्धिज्ञान में तो वह ज्ञानियों के सदा रहता ही है।**

इसप्रकार श्रद्धा, ज्ञान और चारित्र में आत्मा ज्ञानी जीवों को सदा प्रगट ही रहता है। **लब्धिज्ञान और शुद्धपरिणति भी प्रगट पर्यायरूप ही हैं, शक्तिरूप नहीं।**

हमारे जीवन में एक बार यह निर्णय हो गया कि ये मेरे पिताजी हैं; ये मेरी माँ है, ये मेरे भाई हैं तो फिर रोजाना इस बात को रटना नहीं पड़ता, सोचना नहीं पड़ता; यह सब बातें सदा ज्ञान-श्रद्धान में कायम ही रहती हैं; उसीप्रकार **यह भगवान आत्मा भी एक बार अनुभूतिपूर्वक ज्ञान-श्रद्धान में आ जाता है तो फिर सोचे बिना ही वह श्रद्धा-ज्ञान में निरंतर रहता ही है।**

एक बार अनुभव में आ जाने की तो बात ही क्या करना; देव-शास्त्र-गुरु के कथनानुसार भी जब एक बार निर्णय हो जाता है; तब भी तो यह बात हमारे घोलन का विषय बन जाती है। इसी के आधार पर प्रायोग्यलब्धि में विशेष आत्मरस का परिपाक होता है, इसी के बल पर करणलब्धि में प्रवेश होता है और अन्त में इसी के आधार पर आत्मानुभूति होती है, सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र की प्राप्ति होती है।

अभी-अभी जो दो प्रकार के अनुभव की बात की थी; वह सम्यग्दृष्टि जीव की बात थी। अब जो बात कह रहे हैं; वह सम्यक्त्व के सन्मुख मिथ्यादृष्टि की बात है। **(क्रमशः)**

शोक समाचार

1. दिल्ली निवासी श्री पूनमचंदजी सेठी का दिनांक 19 अगस्त को शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया है। आप श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन परमागम मंदिर ट्रस्ट सोनागिरि के अध्यक्ष थे। आप गहन स्वाध्यायी थे तथा जीवन पर्यंत गुरुदेवश्री के तत्त्वज्ञान से जुडे रहे। आपके चिरवियोग से मुमुक्षु समाज को एक अपूरणीय क्षति हुई है।

2. बड़ामलहरा (म.प्र.) निवासी पण्डित बाबूलालजी शास्त्री का दिनांक 22 अगस्त को 78 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपका पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं विधान आदि आयोजनों में सक्रिय सहयोग रहता था। आपका सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में सक्रिय सहयोग रहा। आप तीर्थधाम सिद्धायतन के सक्रिय सदस्य थे।

3. सिरसागंज-फिरोजाबाद (उ.प्र.) निवासी श्री कैलाशचंदजी पोद्दार का दिनांक 21 जून को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत स्वाध्यायी एवं तत्त्वजिज्ञासु थे। आपकी स्मृति में आपके पुत्रों श्री प्रताप चन्द, प्रभाष चन्द, सत्येन्द्र कुमार एवं संजीवकुमार की ओर से जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये की राशि प्राप्त हुई।

4. कोटा (राज.) निवासी श्रीमती पुष्पा देवी बज धर्मपत्नी स्व.श्री सुगनचन्दजी बज का दिनांक 14 जनवरी 2012 को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

5. मैनपुरी (उ.प्र.) निवासी श्रीमती प्रेमवती जैन धर्मपत्नी स्व. श्री लक्ष्मी निवास जैन का दिनांक 16 मार्च को 103 वर्ष की आयु में समाधि भावनापूर्वक देहावसान हो गया।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

शुभकामनायें

बापूनगर, जयपुर निवासी श्री जितेन्द्रकुमारजी जैन द्वारा अपने सुपौत्र करणवीर जैन के चतुर्थ जन्मदिवस के अवसर पर जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग विज्ञान को 2000/-रुपये प्रदान किये गये।

ज्ञातव्य है कि आप पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित गतिविधियों का लाभ लेते हुये सक्रिय सहयोग करते हैं।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

देहादि परपदार्थों से भिन्न निज भगवान आत्मा में अपनापन स्थापित होना भी एक अभूतपूर्व क्रान्ति है, धर्म है। **ह्न आत्मा ही है शरण, पृष्ठ-51**

शाकाहार दिवस मनाया

दिनांक 9 अगस्त को पूरे देश में अहिंसा एवं शाकाहार के प्रचार-प्रसार के लिये गैर सरकारी संस्था पीपल फॉर एनीमल लिबरेशन द्वारा शाकाहार दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर **मुम्बई में** श्री देवांग गाला एवं श्री आराध्य टडैया के निर्देशन में होर्निमान सर्कल, फ्लोरा फाउंटेन के पास ● **जयपुर में** श्री सर्वज्ञ भारिल्ल के निर्देशन में गाँधी सर्किल, जे.एल.एन. मार्ग पर ● **कोल्हापुर में** श्री कपिल रोटे के निर्देशन में छत्रपति शिवाजी महाराज, दसरा चौक पर ● **बेलगाम में** श्री सुधर्म मुडल्गी के निर्देशन में बोगर्वास सर्कल, साम्बाजी की मूर्ति के पास ह्न सभी स्थानों पर दोपहर 12 बजे से अनेक युवा साथियों ने एकत्रित होकर शाकाहारी पशुओं की फैन्सी ड्रेस पहनकर, उनके पुतले खडे करके, पम्पलेट, बैनर आदि लगाकर शाकाहार को अपनाने, जीव हत्या को रोकने, पर्यावरण की रक्षा करने आदि के लिये लोगों को प्रेरित किया।

आयोजित कार्यक्रमों को स्थानीय समाचार पत्रों एवं मीडिया ने प्रमुखता से कवरेज किया।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

12 से 19 सितम्बर	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्युषण
19 से 29 सितम्बर	नागपुर	दशलक्षण महापर्व
1 अक्टूबर	रायपुर	क्षमावाणी
21 से 30 अक्टूबर	जयपुर	शिक्षण शिविर
3 नवम्बर	अलीगढ	दीक्षान्त समारोह
10 से 14 नवम्बर	देवलाली	दीपावली
24 से 29 नवम्बर	सम्मेदशिखर	पंचकल्याणक
25 से 30 दिसम्बर	भीलवाड़ा	पंचकल्याणक

प्रकाशन तिथि : 28 अगस्त 2012

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127